. निवेदन

****

पग-पग पोखरि माछ-मखान
सरस बोल मुस्की, मुख पान
विद्या वैभव शान्ति-प्रतीक
सरितांचल ई मिथिला थीक

. मिथिला मखानक हेतु विख्यात अछि। बड़कासँ बड़का नेताकेँ मखानक माला पहिराकऽ स्वागत कयल जाइत छनि, मखानक खीर खुआओल जाइत छनि। ई मिथिलाक विशिष्ट पदार्थ मानल जाइछ। बहुत गौरव भेल जे आइ वित्तमंत्री महोदया मधुबनी पेंटिंगवला सारी पहिरिकऽ संसदमे अयली आ बजेट भाषणमे घोषणा कयलनि जे एतऽ मखानक उद्योग स्थापित कयल जायत। ई सराहनीय आ स्वागतयोग्य निर्णय थिक, जाहि लेल सरकारकेँ भूरि-भूरि धन्यवाद देल जयबाक चाही।

किन्तु, करबद्ध निवेदन जे 'मखान'क नामकेँ विकृत नहि कयल जयबाक चाही। 'मखान'केँ 'मखाना' नहि कहल-लिखल जयबाक चाही। हम नहि बुझैत छी जे मिथिलावासी जे क्यो छी से अपन अग्रज (पिता-पितामह)क मुँहेँ 'मखाना' सुनने होयबनि। 'मखान'मे जे मिथिलाक संस्कृतिक सुगन्धि अबैत छैक,से 'मखाना'मे कथमपि नहि आबि सकैत छैक। जहिना 'पान' पाना नहि भऽ सकैछ, 'माछ' माछा नहि भऽ सकैछ, तहिना 'मखान' मखाना नहि भऽ सकैत अछि। ई मैथिली भाषापर अप्रत्यक्ष प्रहार थिक, षड़यंत्र थिक।

हमरा लोकनि एहि शब्दक विरोध करी। विशेषत: समस्त मिथिलाक जनप्रतिनिधि लोकनिसँ, जे अपन गाम-घरमे कथमपि बाबा-बाबूक मुँहसँ 'मखाना' बजैत नहि सुनने होयताह, विशेष रूपेँ निवेदन करैत जैयनि जे मिथिलाक संस्कृति आ भाषाक निजताकेँ सुरक्षित रखबा लेल सबतरि 'मखान' बाजथि आ लिखथि तथा सरकारी संस्थानमे एही शब्द (मखान– Makhan)क प्रयोग करबाबथि।

(Makhana नहि, Makhan)

– भीमनाथ झा

01. 02. 2025